रिकॉर्ड :– तू प्यार का सागर है..... ॐ पिताश्री 19/9/62

ओम शान्ति। भगवान बैठ समझाते हैं, बच्चे बाप की महिमा करते हैं कि परमपिता प॰ ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर, नॉलेजफुल है। तो ज़रूर कोई समय आकर नॉलेज दी है। जब नॉलेज देने आए हैं तो ज़रूर उनकी जयन्ती भी हुई होगी। गाते भी है ज्ञान सागर की जयन्ती। पारलौकिक परमपिता प॰ ज्ञान का सागर है वा ऐसे कहेंगे, स्प्रिचुअल लीडर है। सो भी फिर निराकार है। यहाँ तो सभी है स्प्रिचुअल मनुष्य लीडर और यह महिमा है निराकार की, जिसको ही ज्ञान सागर कहा जाता है। वो ऊँच ते ऊँच है। ज़रूर उनमें ऊँच ते ऊँच ज्ञान होगा। तत्व को तो ज्ञान सागर नहीं कह सकते। तत्व थोड़े ही ज्ञान देंगे। जैसे और आत्माएँ परमधाम से आती है वैसे परमपिता प॰ भी परमधाम से आते हैं। उनकी ही इतनी सारी महिमा है जो कोई नहीं जानते। जाने तब जब वो खुद आकर अपनी पहचान दे, अपनी बायोग्राफी बतावें; क्योंकि बच्चे तो हैं यहाँ। बच्चे पुकारते हैं कि आओ, आकर भक्ति का फल दो, तो बाप को आना पड़ता है। वो आकर सभी राज़ बतलाते हैं। वो न हो तो न यह ब्रह्मा हो, न ब्राह्मण हो। ब्रह्मा को रचने वाला प॰ को ही कहेंगे। ब्र॰वि॰शं॰ देवताएँ हो गए। गॉड इज़ क्रियेटर कहा जाता है तो सारी मनुष्य सृष्टि का क्रियेटर कहेंगे ना। सिर्फ ब्र॰वि॰ का तो क्रियेटर नहीं होगा ना। मनुष्य सृष्टि कैसे क्रियेट करते हैं वो खुद ही आकर बतलाते। क्रियेट भी ज़रूर नई दुनिया करेंगे। यूँ तो सृष्टि अनादि है। इनकी आदि कब हुई वह कोई जानते नहीं। ईश्वर अनादि है, प्रकृति भी अनादि, माया भी अनादि है। फिरते रहते हैं। यह सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग न मूलवतन में हैं, न सूक्ष्मवतन में हैं। यह युग इस स्थूलवतन में ही हैं जो फिरते रहते हैं। गुरुनानक ने भी कहा है। वो लोग गुरु तो ज़रूर कहेंगे ना। गुरु तो बहुत हैं। स्त्री का पति भी गुरु कहते हैं; परन्तु वो सभी हैं भक्तिमार्ग के गपोड़े। तो यह बहुत समझने की बातें हैं। मनुष्य तो कोई के भी ऑक्युपेशन को नहीं जानते। जगदम्बा भी एक होनी चाहिए ना। उनका एक ही रूप है। ऐसे तो न(हीं) काली भी जगदम्बा है, सरस्वती भी जगदम्बा है। नहीं, जगदम्बा एक है जैसे गॉड एक है। नाम बदल जाने से फिर रूप भी बदली हो जाय। बहुत तो हो न सके। यह मनुष्यों की भूल हुई है। जगदम्बा का नाम–रूप, देश–काल बिल्कुल दूसरा। यह है फिमेल्स में ऊँच ते ऊँच जिसकी ही ऊँच पूजा होती है। लक्ष्मी की भी बहुत महिमा, पूजा होती है। दीपमाला पर सभी उनसे धन माँगते हैं। उनका नाम–रूप, देश–काल, पहरवाइस–ड्रेस, काल, ऐक्ट सब अलग है। जगदम्बा को राजेश्वरी नहीं कहेंगे। जगदम्बा हुई तपस्या वाली। आदि देवा भी तपस्या कर रहे हैं। उनको राजेश्वर नहीं कहेंगे। तो जगदम्बा एक ही है। उनका पार्ट भिन्न है। जगदम्बा का मान बहुत भारी है। वो ज्ञान की लोरी देती है। उनकी ऐक्ट अलग है। जगदम्बा है ब्रह्मा की बेटी। शंकर–पार्वती तो स्त्री–पुरुष कहा जाता। जगदम्बा है माता और ब्रह्मा है जगत पिता; परन्तु ऐसे नहीं

कि यह स्त्री–पुरुष है। नहीं। सरस्वती है ब्रह्मा की बेटी मुखवंशावली। उनका नाम–रूप ज़रूर अल(ग) होगा। तो जगदम्बा का पार्ट कब होगा? क्या सतयुग आदि में होंगे? वहाँ तो है ल॰ना॰, फिर है राम–सीता। तो जगदम्बा ज़रूर कलियुग में वा संगमयुग पर चाहिए। कलियुग में तो सभी पतित हैं। तो जगदम्बा की इतनी महिमा क्यों है? इस नाम–रूप में तपस्या करते हैं तो ज़रूर ऊँच ते ऊँच होगी। उनका ऑक्युपेशन तो कोई जानते ही नहीं। वो ही फिर राज–राजेश्वरी बनती है। महाराणी तो श्री लक्ष्मी बिगर कोई को कह न सकेंगे। जगदम्बा भी एक ही है। उनका रूप भी एक ही ...होगा। है ही एक। यह ज्ञान–ज्ञानेश्वरी से फिर जाकर राज–राजेश्वरी बनती है। नाम–रूप सब भिन्न हो जाता। यह है धर्म की बच्ची मुख का(की) सन्तान। वो(लक्ष्मी) तो कुख का(की) सन्तान कहेंगे। जैसे कृष्ण के लिए कहते हैं वो गर्भ से पैदा हुआ। वैसे राधे भी गर्भ से पैदा हुई। जगदम्बा तो गर्भ से नहीं पैदा हुई। यह है ब्रह्मा की बेटी। ब्रह्मा–सरस्वती को एडॉप्टेड करते हैं तो ज़रूर कहाँ से आई होगी ना। ब्रह्मा ने तो बहुतों को एडॉप्टेड किया है। पहले ज़रूर उनका दूसरा जन्म होगा। मनुष्यों ने भूल से सरस्वती को ब्रह्मा की स्त्री समझ लिया है; परन्तु है ब्रह्मा की बेटी। तो यह कितनी गुह्य बातें हैं। शिव भी एक ही है। वो है ज्ञान–ज्ञानेश्वर, जो आकर ज्ञान सुनाते हैं सद्गति करने लिए। पतित–पावन एक ही बार आते हैं और आते भी हैं कलियुग अन्त में। पावन दुनिया कहा जाता है सतयुग को। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं कि यह तो तुम जानते हो जो रोज़ मुरली न सुनेंगे उन्हों को धारणा भी नहीं होगी। इसमें कोई बहाना भी दे नहीं सकते। रोज़ ज्ञान स्नान न करते (हो) तो बी॰के॰ को समझना चाहिए यह उठाए न सकेंगे। कोई बात में बिगड़ा तो फिर ट्रेटर बन जावेंगे। ऐसे बहुत बन जाते हैं। चण्डिका देवी भी दिखलाते हैं। अर्थ तो कोई समझते नहीं। चण्डिका नाम तो निभागा है। यहाँ से ही चण्डिका देवी निकलती है। जो यहाँ से आश्चर्यवत् सुनन्ति, कथन्ति और फिर भागन्ति हो ट्रेटर बन जाते हैं उनको चण्डाल का जन्म मिलता है। तो वो हो गई चण्डिका देवी। दुख देते हैं ना। अमृत पीते2 फिर चले जाते हैं तो बड़े असुर ठहरे। देवियों के ही तो अच्छे नाम होते हैं। काली को थोड़े ही चण्डिका कहेंगे। बाप बतलाते हैं, सर्विस करते थे फिर भागन्ति हो गए हैं तो चण्डिका नाम पड़ा है। उनकी पूजा होनी न चाहिए; परन्तु मनुष्य तो कुछ समझते नहीं। बन्दर की भी पूजा करते हैं। बन्दर में तो 5 विकार होते हैं, उनकी फिर मनुष्य बैठ पूजा करते हैं; क्योंकि जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि कहा जाता है। मनुष्य तो खुद भी जैसे बन्दर है, तो बन्दर जिसमें 5 विकार ज़ोर है उनकी थोड़े ही पूजा होनी चाहिए। दिखाया है रामचंद्र के बाप को 4 बच्चे थे। सो तो वहाँ हो भी नहीं सकते। यहाँ तो मनुष्य 8–10–12 बच्चे पैदा करते रहते हैं। कुतरियों से भी बदतर हो गए हैं।

कितने बच्चे पैदा करते रहते हैं। वहाँ सतयुग में तो सारी आयु में दो बच्चे होते हैं। तो रामचंद्र के बाप को फिर दिखाया है 4 बच्चे थे। ऐसी तो बात ही नहीं, न वहाँ कोई झगड़े की बात थी। धूतिया थी घर फिटाने वाली सो तो यहाँ की बातें हैं। वनवास भी एक ही बार मिला ना। पार्ट तो सब बजने ही हैं। बाकी शास्त्रों की बातें हैं नहीं। जंगलों आदि में जाना तो सन्यासियों का काम है। तो चंडिका भी एक तो नहीं होगी ना। राजधानी में कितने शमशान होंगे। तो चंडिका की फिर पूजा क्यों करते? अर्थ के बदली अनर्थ कर दिया है। महिमा करते हैं; परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। कसम भी उठाते हैं जूठा; क्योंकि सभी नास्तिक हैं ना। हम भी कसम उठाते थे। कब ईश्वर का, कब नूर का भी कसम उठाते हैं, समझते हैं अगर हम झूठ बोलेंगे तो अन्धे हो जावेंगे। ईश्वर का कसम उठाने में भी डर रहता है; क्योंकि वो धर्मराज भी है। इस समय सभी हैं ही पतित नास्तिक। अर्जुन भी नास्तिक था ना। इतने सभी शास्त्र आदि पढ़े, गुरु किए, फिर उनको भी कहा कि यह सब छोड़ो। तो अंधियारा हुआ ना। अर्जुन को कितने गुरु थे। पूरा पार्ट बज रहा है। बाबा अपने गुरुओं की लिस्ट बता सकते हैं क्या सिखलाते थे। वो लोग तो यह शास्त्र ही सुनावेंगे और क्या! तो बाप समझाते हैं मुरली सुनकर फिर धारण करनी है। सर्विस करने वाले ही कहेंगे, हमारे में ज्ञान है। अगर कहा जाए, जाकर सेन्टर संभालो और न कह दे तो शिवबाबा के फरमान को न मानने वाले को नास्तिक कहेंगे। बाप का परिचय देना इसको ज्ञान कहा जाता है, तब आस्तिक कहलावेंगे। बाबा ज्ञान का सागर आकर ज्ञान सुनाते हैं तो सीखना चाहिए। तो यहाँ से जो भागन्ति हो जाते हैं उनका ही चण्डाल का जन्म हो जाता। शूद्र से ब्राह्मण बना देवता बनने लिए, फिर ब्राह्मण से शूद्र बन डेविल असुर बन गया। तो वो फिर प्रजा में भी चण्डाल जाय बनते। इनके लिए ही कहा जाता चढ़े तो राजाई पद, गिर तो चकना चूर। प्रजा में भी कम पद। यह सब राज़ बाबा आकर समझाते हैं।

जगदम्बा का कितना मर्तबा है! बाकी सब हुए उनके बच्चे जो माँ–माँ करते रहते हैं। मात–पिता बच्चे ही कहते हैं। अगर माता–पिता को फालो करेंगे, सर्विस करेंगे, तो सुख घनेरे मिलेगी(मिलेंगे)। सूर्यवंशी राजाओं को सुख घनेरे होगी(होंगे) ना। उनमें भी नम्बरवन है लक्ष्मी–नारायण। फिर धीरे2 कलाएँ कमती होती जाती हैं। यहाँ एम–ऑब्जेक्ट है ही नर से ना॰ बनना। बाबा कितना अच्छी रीत समझाते हैं। कितनी गुह्य प्वाइंट्स अच्छी निकलती हैं जो धारण कर और करानी हैं। सुख देना है। यह ब्राह्मण कुल है बहुत बड़ा घर। इनमें डाडा भी है। मम्मा–बाबा भी हैं। इस ब्राह्मण कुल (का)

बहुत नामाचार है। भल इतने ऊँच लक्ष्मी–ना॰ बने हैं, वो भी बलिहारी इस ब्राह्मण कुल की है। ब्राह्मण कुल है चोटी। वो लक्ष्मी–नारायण तो प्रालब्ध के हो गए। प॰ न होता तो ब्रह्मा भी कोई काम का न होता। शिवबाबा है तो वर्थ पाउण्ड बने हैं। यह ब्रह्मा जिसको दादा कहते थे वो भी वर्थ ऐ पैनी था। हरेक मनुष्य वर्थ नॉट ऐ पैनी है। सन्यासी सन्यास करते हैं ज़रूर वर्थ पैनी हैं। पुरुषार्थ करते हैं पाउण्ड बनने लिए। भक्तिमार्ग में भी अच्छी भक्ति कर भगवान से वर लेने चाहते हैं। भक्त तो सभी हैं। सभी वर चाहते हैं। भगवान आकर सभी को अपने स्वीट होम ले जावेगा। बाप सौगात ले आते हैं ना। सौगात सुख देती है ना। अच्छा चम्पल(चप्पल) होगा, खुशी होगी; क्योंकि सौगात है। बाबा फिर सौगात देते हैं वैकुण्ठ की। फर्स्ट क्लास सौगात है। कहते हैं, मैं तीरी पर बहिश्त लाता हूँ। अगर कोई मेरी मत पर चले तो बाप कहे एक और बच्चे करे दूसरा, तो बाप राज़ी कैसे होगा! बाप को राज़ी नहीं कर सकते। यह तो जानते हैं आधा कल्प भक्ति करने वाले सिकीलधे बच्चे आकर मिलते हैं। वो भी बाप का न माने तो पद क्या पावेंगे! तकदीर देख टीचर को रहम पड़ता है। पढ़ते तो एक .....; परन्तु तकदीर! बैरिस्टर भी नम्बरवार होते हैं। ऐसे भी बहुत हैं ..... समझते होंगे दासी बनने ..... उस दुनिया का सुख जाकर लेवें। जाकर चण्डाल बनेंगे। तो कुछ डर भी रहना चाहिए। सर्विस का एवजा देना चाहिए अच्छा, न कि बुरा। जो बुरा एवजा देते हैं उनका(को) चंडिका देवी और चंडाल कहा जाता है। बाबा कितना राज़ समझाते हैं; परन्तु एक कान से सुन दूसरे से निकाल देते तो उनको तता तवा, तमोप्रधान बुद्धि कहा जाता है। बाबा सतोप्रधान बनाते हैं; परन्तु बनते नहीं। एक तरफ है बृहस्पति की दशा। दूसरे तरफ फिर है राहू की दशा। तकदीर बहुत बड़ी है। तदबीर कराने वाला भगवान भी क्या करे! भगवान पुरुषार्थ करावे और बच्चा न करे तो उनको क्या कहेंगे! देह–अभिमान बहुत खराब है। पहले थप्पड़ लगता है देह–अभिमान का। फिर सभी किचड़ा बाहर निकल पड़ता है। भूला और लगा माया का गोला। माया रावण 5 विकारों को कहा जाता है। विकारों का कोई रूप तो होता नहीं। उन्हों (से) कितना बड़ा वोता बैठ बनाया है रावण का। काम का रूप क्या है? क्रोध दास वा क्रोध मल वा श्री क्रोध कहेंगे क्या? रूप तो उनका है ही नहीं। वोता कितना बड़ा बैठ बनाते हैं। शिवबाबा की तो महिमा है। 5 विकारों की महिमा है क्या! यह तो शैतान हैं, उन पर जीत पानी है। अच्छा! ॐ